छुटकारे का इतिहास – भाग 3

अध्याय 13: असंभाव्य विजेता

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ 1 शमूएल 17 निकालें।

मैं उसे संक्षेप में दोहराना चाहता हूँ जो हमने अब तक किया है क्योंकि हम छुटकारे के इतिहास की इस कहानी में नये चरण में प्रवेश कर रहे हैं। और इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप उसके बारे में सोचें जो हमने इस वर्ष देखा है। हमने पहले सप्ताह में प्रस्तावना से आरम्भ किया, उत्पत्ति अध्याय 1 से 11, और अन्तिम लक्ष्य है कि हम नई सृष्टि, पुनः सृष्टि तक पहुँचेंगे, परन्तु बीच में छुटकारे की एक सम्पूर्ण प्रक्रिया है।

और पहला भाग छुटकारा था, "वाचा के लोगों से प्रतिज्ञा।" वह उत्पत्ति 12 में आरम्भ हुआ और निर्गमन के अन्त तक गया, और हमने देखा कि परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ दो मुख्य वाचाओं को बाँधा। पहली वाचा अब्राहम के साथ, उत्पत्ति 12 और 15 तथा अन्य स्थानों पर, अब्राहम के साथ वाचा, और फिर मूसा के साथ की वाचा जो निर्गमन 3 में आरम्भ होती है और जिसे सीनै पहाड़ पर स्थिर किया जाता है, मूसा के साथ की वाचा। और आप देखते हैं कि परमेश्वर इन लोगों से वाचाओं के द्वारा संबंध स्थापित करता है। हम इसे देख चुके हैं।

फिर हम अगले भाग, भाग दो में आए, "देश की व्यवस्था," लैव्यवस्था, जहाँ उन्होंने व्यवस्था को प्राप्त किया। गिनती, वे प्रतिज्ञा के देश में पहुँचने के लिए चक्कर लगाते हैं। व्यवस्थाविवरण, वे प्रतिज्ञा के देश के मुहाने पर हैं, उस देश की सीमा पर, और वे व्यवस्था का पुनरावलोकन करते हैं, वे पुनः दूसरी बार व्यवस्था को सुनते हैं, और फिर यहोशू, वे देश को अधिकार में ले लेते हैं। न्यायियों, जिसे हमने अभी पढ़ा में वे देश में व्यवस्थित हो रहे हैं और सब कुछ ठीक नहीं हो रहा है। हर व्यक्ति वही करता है जो उसे अच्छा लगता है और नैतिक पतन, आत्मिक मूर्तिपूजा, अनैतिकता, लैंगिक अनैतिकता में बढ़ोतरी। हर स्थान पर बुराई का बोलबाला है।

और वे एक राजा को चाह रहे थे। वे ऐसे राजा को नहीं चाहते हैं जो परमेश्वर और वाचा से संबंध स्थापित करने में उनकी सहायता करे। वे ऐसा राजा चाहते हैं जो उनके चारों ओर की दूसरी जातियों के राजाओं के समान हो और जो ताकतवर हो। और वे एक राजा के लिए दोहाई दे रहे हैं, और यह हमें तीसरे भाग

पर लाता है, "एकीकृत राज्य में असफल राजा।" और हम पहले राजा शाऊल को देखेंगे, फिर राजा दाऊद को और हम वास्तव में उनको तुलनात्मक रूप में देखेंगे, और फिर हम तीसरे स्थान पर दाऊद के पुत्र, राजा सुलैमान को देखेंगे। अतः अगले तीन सप्ताहों तक, हम उन तीन राजाओं के बारे में देखेंगे।

आज हम दाऊद की एक महत्वपूर्ण तस्वीर पर आते हैं, और शाऊल के साथ संबंध में दाऊद। अब, आप जानते हैं कि 1 शमूएल 17 सबसे लम्बी और बड़ी कहानियों में से एक है, और यह विवरणों से भरी है। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक हर जगह पर विवरण दे रहा है, शायद ऐसे विवरण भी जो आवश्यक नहीं हैं, परन्तु वह चाहता है कि यह कहानी लोगों के दिलों में बैठ जाए। और इसलिए मैं चाहता हूँ कि हम इस कहानी और उसके सारे विवरणों को पढ़ें। हम पूरी कहानी को पढ़ेंगे और उसके प्रभाव को महसूस करेंगे। मैं चाहता हूँ कि हम इसके प्रभाव को जितना हो सके उतना प्राप्त करें, और फिर मैं चाहता हूँ कि हम इसके अर्थ के बारे में सोचें।

यह एक साधारण कहानी है। जो लोग कलीसिया में नहीं पले–बढ़े हैं वे भी अक्सर दाऊद और गोलियत की कहानी को जानते हैं, कम से कम सरसरी तौर पर। और मैं सोचता हूँ कि यह इतनी आम है कि हम मुख्य बिन्दू से चूक जाते हैं। हम सोचते हैं कि यह एक बालक की नैतिक कहानी है जो बहादुरी और साहस के साथ एक दैत्य का सामना करता है, और इसे इतने प्रकार से लागू किया जाता है कि मुझे नहीं लगता कि वे इस पद्यांश के अनुसार हैं। और इसलिए मैं चाहता हूँ कि हम इस कहानी को पढ़ें और सोचें कि वास्तव में इसका क्या अर्थ है।

1 शमूएल 17:1. अब पलिश्तियों ने युद्ध के लिए अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया; और यहूदा देश के सोको में एक साथ होकर सोको और अजेका के बीच एपेसदम्मीम में डेरे डाले। और शाऊल और इस्राएली पुरूषों ने भी इकट्ठे होकर एला नाम तराई में डेरे डाले, और युद्ध के लिए पलिश्तियों के विरूद्ध पांती बान्धी। पलिश्ती तो एक और के पहाड़ पर और इस्राएली दूसरी ओर के पहाड़ पर खड़े रहे; और दोनों के बीच तराई थी।

आपको तस्वीर का पता चल गया है। दो पहाड़ों के बीच में एक तराई है, एक प्रकार से एक सूखी हुई खाई, और पलिश्ती एक ओर के पहाड़ पर हैं, इस्राएली दूसरे पहाड़ पर हैं, और तराई वह स्थान है जहाँ युद्ध होने वाला है। और यही यहाँ की स्थिति है।

पद 4 पर आएँ। "तब पलिश्तियों की छावनी में से गोलियत नाम एक वीर निकला, जो गत नगर का था, और उसके डील की लम्बाई छः हाथ एक बित्ता थी।" एक विजेता। इस शब्द का सम्पूर्ण पुराने नियम में केवल इसी अध्याय में प्रयोग किया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है दोनों सेनाओं के बीच एक निर्णायक व्यक्ति। और यह दोनों सेनाओं के बीच वास्तव में एक निर्णायक व्यक्ति था। वह छः हाथ एक बित्ता लम्बा था, जो लगभग 9 फुट, 9 इन्च होता है। वह बास्केट बॉल के लिए अच्छा है। उसकी आँखें जाली के लगभग बराबर हैं। यह बास्केट बॉल में कारगर होता है।

और इस व्यक्ति की लम्बाई इतनी है, परन्तु यदि आप बास्केट बॉल के बारे में कुछ जानते हैं, तो एनबीए के बहुत से लम्बे खिलाड़ी दुबले और बेढंगे हैं, यदि मैं करोड़पति अतुल्य खिलाड़ी के बारे में ऐसा कह सकता हूँ, परन्तु गोलियत के साथ ऐसा नहीं था। अगला पद, पद 5, उसके सिर पर पीतल का टोप था; और वह एक पत्तर का झिलम पहने था, जिसका तौल पांच हजार शेकेल पीतल का था। लगभग 125 पाउण्ड। यानि कुछ इस्राएलियों से भी अधिक वजन को वह पहने हुए था।

उसने वह झिलम पहन रखी है, और इस झिलम के अतिरिक्त, उसकी टांगों पर पीतल के कवच थे और उसके कन्धों के बीच बरछी बन्धी थी। उसके भाले की छड़ जुलाहे की डोंगी के समान थी, और उस भाले का फल छः सौ शेकेल लोहे का था, 15 पाउण्ड। उसके भाले का फल 15 पाउण्उ का था। और इससे बढ़कर, बड़ी ढ़ाल लिए हुए एक जन उसके आगे आगे चलता था। इस दैत्याकार क्रूर व्यक्ति ने न केवल इन सारे हथियारों को बान्ध रखा है जिन में वह आसानी से समा जाता है, बल्कि एक व्यक्ति और उसके साथ है जो उसके आकार की ढ़ाल को लेकर उसके आगे चलता है। गालियत जब पार्टी में आता है तो सबकी नजर उस पर पड़ती है।

और गोलियत सामने आता है। पद 8 कहता है, "वह खड़ा होकर इस्राएली पांतियों को ललकार के बोला, तुम ने यहाँ आकर लड़ाई के लिए क्यों पांति बान्धी है? क्या मैं पलिश्ती नहीं हूँ, और तुम शाऊल के अधीन नहीं हो? अपने में से एक पुरूष चुनो, कि वह मेरे पास उतर आए। यदि वह मुझ से लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जायेंगे; परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूं, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी। फिर वह पलिश्ती बोला, मैं आज के दिन इस्राएली पांतियों को ललकारता हूँ, किसी पुरूष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें।"

अतः यहाँ हमारे पास मूलतः कहानी के दो आयाम हैं, जिनमें एक अजेय चरित्र। हमारे पास एक योद्धा के बारे में सारे विवरण, और वे सारे कारण हैं कि क्यों आप इस व्यक्ति से युद्ध नहीं करना चाहेंगे, एक अजेय चरित्र, और दूसरा, एक असंभव चुनौती। मूलतः, अभी गोलियत ने कुछ गरीब इस्राएलियों को उसके साथ युद्ध करने की चुनौती दी है। गोलियत और दूसरे एक व्यक्ति के बीच युद्ध।

कौन इसे करना चाहेगा? कौन इस व्यक्ति का सामना करना चाहेगा? जैसा मैं आपको पहले बता चुका हूँ कि मेरा बड़ा भाई स्टीव हाई स्कूल में राज्य स्तरीय कुश्ती का विजेता था, और वह पुरूष था। उस कुश्ती के मैच के दौरान, उसने 300 पाउण्ड वजनी उस व्यक्ति को उठाकर नीचे पटक दिया। तुम कभी मेरे बड़े भाई स्टीव से मत खेलना।

हमारा एक अच्छा मित्र था, जो देहात का था, और वह हमेशा कहता था, "डेविड, तुम्हें तो अपने घर में ही धकेल दिया गया है," और मैं सोचता हूँ कि वह सही था। मैं अपने आप को मजबूत व्यक्ति नहीं कहता। मैं जानता हूँ कि वह आश्चर्यजनक है। यह हाई स्कूल में था। अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं, लेकिन मुझे खुशी है कि आप इस पर हँस रहे हैं।

मैं और स्टीव थोड़ा अलग हैं, और दुर्भाग्यपूर्ण बात – मेरा भाई एडम यहाँ पर है, हम अपने बड़े भाई स्टीव के लिए अभ्यास करने के औजार थे। और मेरे पास एकमात्र हथियार वहाँ से दौड़ना था। मैं उस हथियार का प्रयोग करता, और यह अनदेखा करने का हथियार था। जब स्टीव से कुश्ती करने की बात आती तो मैं निष्क्रिय हो जाता, और मैं उससे दूर भाग जाता।

अब इस्राएलियों की हालत बिल्कुल ऐसी ही है। पद 11 में लिखा है, उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त डर गए, यानि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। यहाँ तक कि शाऊल भी, केवल वही शारीरिक रूप से योग्य था, गोलियत से लड़ने के लिए शारीरिक रूप से सबसे योग्य वही था। हमने 1 शमूएल में पहले देखा कि शेष इस्राएलियों से सबसे ऊँचा था। परन्तु वह आराम से बैठेगा और कुछ नहीं करेगा, दूसरे इस्राएलियों के समान वह भी भयभीत था।

जब आप पद 11 के अन्त में आते हैं तो दृश्य यही है। यह दैत्याकार व्यक्ति इस्राएल को ललकार रहा है। न केवल इस्राएल के लोगों को, बल्कि इस्राएल के परमेश्वर को भी, चिल्ला रहा है, उन्हें ललकार रहा है।

और इस्राएली, हजारों की सेना सहमी हुई बैठी है। यह लगभग फिल्म के समान है। यह अगले दृश्य के समान है। युद्ध के क्षेत्र से आप हरी–भरी चराई में एक सुन्दर युवा चरवाहे को देखते हैं।

दाऊद तो, पद 12, "यहूदा के बेतलेहेम के उस एप्राती पुरूष का पुत्र था, जिसका नाम यिशै था, और उसके आठ पुत्र थे और वह पुरूष शाऊल के दिनों में बूढ़ा और निर्बल हो गया था। यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर लड़ने को गए थे; और उसके तीन पुत्रों को नाम जो लड़ने को गए थे ये थे, अर्थात् ज्येष्ठ का नाम एलीआब, दूसरे का अबीनादाब, और तीसरे का शम्मा था। और सब से छोटा दाऊद था; और तीनों बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर गए थे, और दाऊद बेतलेहेम में अपने पिता की भेड़ बकरियाँ चराने को शाऊल के पास से आया जाया करता था। वह पलिश्ती तो चालीस दिन तक सवेरे और सांझ को निकट जाकर खड़ा हुआ करता था।

दाऊद के तीन भाई युद्ध के मैदान में हैं, यह सब होते हुए देख रहे हैं, और दाऊद भेड़–बकरियों की रखवाली कर रहा है। और दाऊद का पिता यिशै उसे बुलाता है, और पद 17, यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, यह एपा भर चबैना, और ये दस रोटियाँ लेकर छावनी में अपने भाइयों के पास दौड़ जा; और पनीर की ये दस टिकियाँ उनके सहस्रपति के लिए ले जा। और अपने भाइयों का कुशल देखकर उनकी कोई चिन्हानी ले आना।

युद्ध के मैदान से कुछ लेकर आना। यिशै को कोई जानकारी नहीं है कि दाऊद युद्ध के मैदान से क्या लेकर आएगा। वह गोलियत के सिर को लेकर आएगा। एक चिन्हानी के लिए वह कैसा है? एक 9 फुट 9 इन्च के व्यक्ति के सिर को वह लेकर आएगा। अभी हम नहीं जानते हैं, परन्तु इसके बारे में सोचना रूचिकर है।

वह कहता है, "तू युद्ध के मैदान में जा। उनके लिए ये सामान ले जा, देख वे कैसे हैं और वहाँ से कुछ लेकर आना।" और पद 19, "शाऊल, और वे भाई, और समस्त इस्राएली पुरूष एला नाम तराई में पलिश्तियों से लड़ रहे थे। और दाऊद बिहान को सवेरे उठ, भेड़–बकरियों को किसी रखवाले के हाथ में छोड़कर, उन वस्तुओं को लेकर चला; और जब सेना रणभूमि को जा रही, और संग्राम के लिए ललकार रही थी, उसी समय वह गाड़ियों के पड़ाव पर पहुँचा।" और दाऊद सुबह वहाँ पहुँचा, युद्ध की पृष्ठभूमि, लगभग 15 मील की यात्रा। दाऊद सुबह निकला, सुबह वहाँ पहुँचा, जिसका अर्थ है, आप जानते हैं, कि जो होने वाला था, उस दैत्य का सामना करने की तैयारी में दाऊद ने एक अच्छी मैराथन दौड़ लगाई।

और वह वहाँ पहुँचता है, पद 21, "तब इस्राएलियों और पलिश्तियों ने अपनी अपनी सेना आम्हने–साम्हने करके पांति बान्धी। और दाऊद अपनी सामग्री सामान के रखवाले के हाथ में छोड़कर रणभूमि को दौड़ा, और अपने भाइयों के पास जाकर उनका कुशलक्षेम पूछा। वह उनके साथ बातें कर ही रहा था, कि पलिश्तियों की पांतियों में से वह वीर, अर्थात् गतवासी गोलियत नाम वह पलिश्ती योद्धा चढ़ आया, और पहिले की सी बातें कहने लगा। और दाऊद ने उन्हें सुना। उस पुरूष को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त भय खाकर उसके साम्हने से भागे।"

अब, मैं चाहता हूँ आप इस दृश्य की कल्पना करें। यह पुनः गोलियत की विशालकाय प्रकृति को दिखाता है, कि जब वह आता है, वह बोलता है, वह पहले की तरह ही चिल्लाता है। वह चिल्लाता है, और हजारों इस्राएलियों के बीच चल रहे दूसरे सारे वार्तालाप तुरन्त बन्द हो जाते हैं और उसके बोलते ही वे भयभीत हो जाते हैं। 40 दिनों से वह ऐसा कर रहा है।

अब, अपने आप को दाऊद के स्थान पर रखें। जब आप सुनते हैं, जब आप इस व्यक्ति को न केवल इस्राएलियों, बल्कि इस्राएल के परमेश्वर को भी ललकारते हुए सुनते हैं, और इस्राएल के परमेश्वर की निंदा करते सुनते हैं, शायद यह पहली बार होगा जब दाऊद ने परमेश्वर के नाम की निंदा को सुना होगा। और उसके मन में क्या चल रहा है जब वह इसे सुनता है और सारे परमेश्वर के लोगों को देखता है, सारे इस्राएलियों को, इन सारे सैनिकों को जो भयभीत हैं। और दाऊद पूछने लगता है कि यहाँ क्या हो रहा है। पद 25, "फिर इस्राएली पुरूष कहने लगे, क्या तुम ने उस पुरूष को देखा है जो चढ़ा आ रहा है? निश्चय वह इस्राएलियों को ललकारने को चढ़ा आता है;" और राजा यह करने वाला ळें

राजा शाऊल आराम से बैठा है, कुछ नहीं कर रहा है, वह उस व्यक्ति के लिए ईनाम की घोषणा करता है जो जाकर गोलियत से लड़ेगा, और वह तीन बातों की पेशकश करता है। राजा उस व्यक्ति को धनवान बना देगा जो उसे मार डालेगा, पहली बात, राजा उसे बहुत धन देगा। यदि आप गोलियत को हरा देते हैं तो बहुत धन मिलेगा। दूसरा, उसे अपनी बेटी ब्याह देगा। शाऊल की बेटी, ईनाम नहीं, लेकिन वह उस पेशकश का हिस्सा है। और जो कोई उसे मार डालेगा उसको राजा बहुत धन देगा, और अपनी बेटी ब्याह देगा, और उसके पिता के घराने को इस्राएल में स्वतन्त्र कर देगा। और अब आपके पास धन है, पत्नी को पा लिया है, उसकी बेटी, और फिर उसके पिता के घराने को इस्राएल में स्वतन्त्र कर दिया जाएगा, जिसका अर्थ है मूलतः करों, जिम्मेदारियों से मुक्ति।

इस सप्ताह के लिए कितना उचित पद है। करों से सदा के लिए मुक्ति मिलना कितनी बड़ी बात है? मेरा मतलब है, हम अपने कर चुकाते हैं, परन्तु यह अच्छा होता। मेरा अनुमान है कि यदि ईनाम ऐसा है तो हम में से कुछ लोग गोलियत का सामना करने से पीछे नहीं हटेंगे।

तस्वीर यह है। यह उसके सामने है। दाऊद उत्तर देता है, अपने पास खड़े लोगों से कहता है, "जो उस पलिश्ती को मारके इस्राएलियों की नामधराई दूर करेगा उसके लिए क्या किया जाएगा? वह खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे? तब लोगों ने उस से वही बातें कहीं, अर्थात् यह, कि जो कोई उसे मारेगा उस से ऐसा ऐसा किया जाएगा।"

मैं चाहता हूँ कि आप इस बात पर ध्यान दें कि यहाँ दाऊद का विवरण उन लोगों से बिल्कुल भिन्न है जो इस दृश्य के बारे में बातचीत कर रहे थे। वे दाऊद से कहते हैं, "क्या तुम ने इस व्यक्ति को देखा है, जो चढ़ा आता है?" दाऊद कहता है, "यह खतनारहित पलिश्ती क्या है?" वह अपने बारे में क्या सोचता है, परमेश्वर के लोगों से अलग, दूसरी मूरतों की आराधना करने वाला, जो परमेश्वर की वाचा के लोगों का हिस्सा नहीं है। यह कौन है – यह व्यक्ति कौन है? और पहले उसने कहा था कि वह इस्राएल की निन्दा करने के लिए आया था। दाऊद कहता है, "वह जीवित परमेश्वर की सेना की निन्दा कर रहा है।" यह केवल एक सेना की निन्दा करने से कहीं गहरा है। यह परमेश्वर, सच्चे परमेश्वर की निन्दा करना है।

और दाऊद इस तस्वीर से उत्तेजित हो रहा है। वह पूछता रहता है, पद 28, "तब उसका बड़ा भाई एलीआब," – एलीआब के बारे में एक टिप्पणी। 1 शमूएल 16, इससे ठीक पहले, जब शमूएल इस्राएल के अगले राजा का अभिषेक करने के लिए यिशै के घर गया, तो तर्क के अनुसार एलीआब सही चुनाव था। उसे देखकर शमूएल ने सोचा कि यही इस्राएल का अगला राजा होना चाहिए। परन्तु वहाँ पर हम पाते हैं कि मनुष्य बाहरी स्वरूप को देखता है। यहोवा दिल को देखता है।

और दाऊद का अभिषेक किया जाता है और उपयुक्त चुनाव इसे होते हुए देखता है, संभवतः थोड़ी कड़वाहट के साथ। जब दाऊद उन मनुष्यों से बातें कर रहा था, तब उसका बड़ा भाई एलीआब सुन रहा था; और एलीआब दाऊद से बहुत क्रोधित होकर कहने लगा, तू यहाँ क्यों आया है? और जंगल में उन थोड़ी सी भेड़ बकरियों को तू किस के पास छोड़ आया है? तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है; तू तो लड़ाई देखने के लिए यहाँ आया है।

पद 29, दाऊद ने कहा, "मैं ने अब क्या किया है? वह तो निरी बात थी?" जैसे, शान्त हो जाओ, भाई। केवल कुछ सवाल पूछ रहा हूँ। पद 30, "तब उस ने उसके पास से मुँह फेरके दूसरे के सम्मुख होकर वही बात कही; और लोगों ने उसे पहिले की नाईं उत्तर दिया।" और दाऊद शोध कर रहा है और स्पष्ट कर रहा है कि वह गोलियत का सामना करना चाहता है।
अब, यह बात फैलने लगती है और अन्ततः शाऊल तक पहुँचती है, और ऐसा होता है। जब दाऊद की बातों की चर्चा हुई, तब शाऊल को भी सुनाई गई; और उसने उसे बुलवा भेजा, दाऊद को बुलवा भेजा। और हम इन दो व्यक्तियों को देखेंगे, इस्राएल का वर्तमान राजा, और इस्राएल का आगामी राजा दोनों आमने–सामने, हम उन दोनों के बीच विरोधाभास को देखेंगे।

पद 32, "तब दाऊद ने शाऊल से कहा, किसी मनुष्य का मन उसके कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा।" आप उसके साहस, उसकी निडरता, उसके भरोसे को देखते हैं, और शाऊल उत्तर देता है। "शाऊल ने दाऊद से कहा," पद 33, "तू जाकर उस पलिश्ती के विरूद्ध युद्ध नहीं कर सकता; क्योंकि तू तो लड़का ही है, और वह लड़कपन ही से योद्धा है।" शाऊल दाऊद को उसी प्रकार देख रहा है जैसे संसार दाऊद को देखता। कोई अवसर नहीं है। आप जानते हैं, 20 वर्ष की आयु, शायद उस से भी कम का यह चरवाहा, और यह विशालकाय व्यक्ति जो योद्धा है। कोई रास्ता नहीं है।

दाऊद ने शाऊल से कहा, यह दाऊद के दो प्रकार के सामर्थी लघु–भाषणों में से एक है। वह कहता है, "तेरा दास अपने पिता की भेड़ बकरियाँ चराता था; और जब कोई सिंह वा भालू झुंड में से मेमना उठा ले गया, तब मैं ने उसका पीछा करके उसे मारा, और मेमने को उसके मुँह से छुड़ाया; और जब उस ने मुझ पर चढ़ाई की, तब मैं ने उसके केश को पकड़कर उसे मार डाला। तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मार डाला; और वह खतनारहित पलिश्ती उनके समान हो जाएगा, क्योंकि उसने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है।"

फिर दाऊद ने कहा, "यहोवा जिस ने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा।" मैं चाहता हूँ आप उस बात को समझें जो दाऊद ने अभी किया, क्योंकि उसने शाऊल और इन सारे इस्राएलियों की समस्या की ओर संकेत किया जो भय से दुबके हुए थे। शाऊल और इस्राएलियों का यह विश्वास था कि गोलियत दैत्य था, और यह सत्य नहीं था। क्योंकि चाहे वह 9 फुट 9 इन्च ऊँचा हो, अपनी सारी ताकत के साथ, गोलियत यहोवा परमेश्वर की तुलना में बौना था।

और यहोवा, वह महान है और वह छुड़ाने में सक्षम है। यह केवल एक खतनारहित पलिश्ती है, और कोई नहीं है – हम यहोवा के पीछे चलते हैं, यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू के पंजों से बचाया है, इस खतनारहित पलिश्ती से मुझे छुड़ाने में उसे कोई समस्या नहीं होगी। क्या यह विशाल नहीं है? यह केवल दृष्टिकोण है।

जब हम – थोड़ा रूकें। जब हम कठिनाईयों का सामना करते हैं, कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं, हमारे सामने अवरोध होते हैं, तब हम उन पर जितना अधिक ध्यान देते हैं, वे उतने ही बड़े होते जाते हैं, क्या नहीं? और वे इतने बड़े, इतने विनाशकारी हो जाते हैं, और ऐसे समयों में हमें यह अहसास होना चाहिए कि परमेश्वर महान है। परिस्थिति चाहे कितनी भी कठिन हो, अवरोध चाहे कितना भी चुनौतिपूर्ण हो, हमारा परमेश्वर सबसे महान है। वह इन परिस्थितियों या इस अवरोध के बीच में से आपको छुड़ा सकता है।

और दाऊद शाऊल से यही कहता है। शाऊल उसकी ओर देखकर कहता है, "जा, यहोवा तेरे साथ रहे।" पद 38, " तब शाऊल ने दाऊद को अपने वस्त्र पहनाए, और पीतल का टोप उसके सिर पर रख दिया, और झिलम उसको पहनाया। और दाऊद ने उसकी तलवार वस्त्र के ऊपर कसी।" यह थोड़ा अजीब है। शाऊल दाऊद को बता रहा है कि उसे युद्ध में कैसे जाना चाहिए। जैसे कि शाऊल के पास स्थिर रहने का आधार है। वह डरपोक है और बिना कुछ किए चुपचाप बैठा है।
और दाऊद इसे पहनकर चलने का यत्न करता है, क्योंकि उसने उन्हें न परखा था। इसलिए दाऊद ने शाऊल से कहा, इन्हें पहिने हुए मुझ से चला नहीं जाता, क्योंकि मैं ने इन्हें नहीं परखा। और दाऊद ने उन्हें उतार दिया। अब हम जानते हैं कि शाऊल कितना बड़ा था जबकि दाऊद छोटा था, और इसलिए वे वस्त्र उसके लिए बहुत बड़े थे। परन्तु उसके द्वारा इन्हें पहनने और फिर उतारने की यह तस्वीर दो स्तरों पर प्रतीकात्मक है। इसके बारे में सोचें। एक, संसार जिस बात को युद्ध के लिए आवश्यक कहता है वह उसे यह दिखाने के लिए उतार देता है कि उसे लड़ाई करने के लिए केवल यहोवा की आवश्यकता है।

परन्तु फिर, और अधिक गहरे स्तर पर, यह तुलना, राजा शाऊल और भावी राजा दाऊद के बीच यह तुलना, इस तस्वीर में दाऊद कह रहा है, "मेरा राज्य तुम्हारे राज्य से बहुत अलग होगा," क्योंकि तुम्हारा, हाँ, तुम्हारा राज्य अन्यजातियों के आडम्बरपूर्ण राजाओं को प्रतिबिम्बित करता है जो अपने आसपास की सारी वस्तुओं के द्वारा अपनी ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। और दाऊद उसे उतारकर कहता है, "मैं अब्राहम

और इसहाक और याकूब और मूसा की रीति पर जा रहा हूँ, जो चरवाहों के रूप में खाली हाथ लेकिन परमेश्वर के प्रबन्ध और वायदे के साथ गए।"

और वह यही करता है। वह जाता है—पद 40 में लिखा है, "तब उसने अपनी लाठी हाथ में ले नाले में से पाँच चिकने पत्थर छाँटकर अपनी चरवाही की थैली, अर्थात् अपने झोले में रखे।" संभवतः टेनिस की गेंद के आकार के। गोफन के साथ वह पलिश्ती के निकट गया। अब दाऊद और गोलियत के बीच घमासान लड़ाई होने वाली है। उसके पास वह सब है जिसे इस संसार ने उसे युद्ध के लिए तैयार करने हेतु बनाया है। और आप दाऊद को देखते हैं, उसके पास परमेश्वर के हाथों से रचे गए कुछ पत्थर ही हैं।

आधार तैयार है, पद 41. "जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; क्योंकि वह लड़का ही था, और उसके मुख पर लाली झलकती थी, और वह सुन्दर था। तब पलिश्ती ने दाऊद से कहा, क्या मैं कुत्ता हूँ, कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है?" स्पष्टतः उसने पत्थरों को नहीं देखा था। काश उसने उन पत्थरों को देखा होता, परन्तु, "लाठी लेकर मेरे पास आता है?" तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा। जब हम इसे पढ़ते हैं तो हमारा मन तुरन्त पीछे की ओर जाता है, आरम्भ में अब्राहम के द्वारा अपने लोगों से परमेश्वर की प्रतिज्ञा, "मैं आशीष दूँगा,"— उत्पत्ति 12:1,2,3. "जो तुझे आशीष दे उसे मैं आशीष दूँगा और जो तुझे स्राप दे उसे मैं स्राप दूँगा।" अनजाने में गोलियत ने, परमेश्वर के जन को कोसने के द्वारा अपने ऊपर दण्ड को ले लिया है। वह परमेश्वर के स्राप को सहन करेगा।

पद 44, "फिर पलिश्ती ने दाऊद से कहा, मेरे पास आ, मैं तेरा माँस आकाश के पक्षियों और वनपशुओं को दे दूँगा।" अब, वे लड़ाई के शब्द थे। पुराने नियम में ऐसी रद्दी बात को सुनकर दाऊद चुप नहीं रहा। मैं चाहता हूँ आप उसे सुनें जो उसने कहा। यह अच्छा है। आप जानते हैं, जब आप ऐसी परिस्थिति में पड़ते हैं और आप सोचते हैं, ओह, काश मैं ने ऐसा कहा होता। दाऊद कहता है।

दाऊद ने पलिश्ती से कहा, "तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है। आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझ को मारूंगा, और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूंगा; और मैं आज के दिन पलिश्ती सेना की लोथें आकाश के पक्षियों और पृथ्वी के जीव जन्तुओं को दे दूँगा; तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में एक परमेश्वर है। और यह

समस्त मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार वा भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिए कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।"

यह अच्छा है। दाऊद ने गोलियत से जो कहा वह स्पष्ट है। गोलियत, एक पल में, तू और तेरे पीछे खड़े सारे पलिश्ती जान लेंगे और मेरे पीछे भयभीत होकर खड़े सारे इस्राएली जान लेंगे कि इस्राएल में एक परमेश्वर है जो सर्वोच्च है, और कोई उसे ललकार नहीं सकता और वह अपनी महिमा का प्रदर्शन करेगा और तुम्हें नष्ट कर देगा। यह ताकतवर है। संग्राम यहोवा का है। वह मेरे लिए इसे लड़ेगा।

और रूखी बात के समाप्त होने पर, पलिश्ती उठकर दाऊद का सामना करने के लिए निकट आया। तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का सामना करने के लिए फुर्ती से दौड़ा। फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर उस में से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि पर मुँह के बल गिर पड़ा। पहला चरण, गोलियत का गिरना – इससे न चूकें। यहीं रहें क्योंकि हम एक ही पल में वापस यहाँ लौटेंगे। गोलियत गिरता है, मुँह के बल धरती पर गिर पड़ता है।

अब, हम अगले कुछ पदों में दाऊद द्वारा गोलियत को मारने के बारे में बात करेंगे, और इसके बारे में थोड़ी चर्चा और वाद–विवाद होता है कि यथार्थ में गोलियत कब मरा। मैं सोचता हूँ कि इस बिन्दू पर किसी प्रकार बिजली गुल हो गई। ऐसा ही होता है जब एक पत्थर आपके माथे में घुस जाता है। परन्तु वह वास्तव में कब मरा इस पर थोड़ी चर्चा और वाद–विवाद हो सकता है, परन्तु मैं चाहता हूँ कि आप इसे सुनें। "यों दाऊद ने पलिश्ती पर गोफन और एक ही पत्थर के द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला; परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार न थी।"

ठहरें। दाऊद ने बिल्कुल यही कहा था कि ऐसा होगा, "यहोवा तलवार वा भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता," और ऐसा ही होता है, आप लैव्यवस्था पर जाएँ और वहाँ परमेश्वर की निन्दा करने का दण्ड था– कोई जानता है? पत्थरवाह किया जाना।

तब दाऊद दौड़कर पलिश्ती के ऊपर खड़ा हुआ, और उसकी तलवार पकड़कर म्यान से खींची, और उसको घात किया, और उसका सिर उसी तलवार से काट डाला। दूसरा चरण, सिर काटना। अब, मैं जानता हूँ

कि यह थोड़ा वीभत्स है, परन्तु कहानी यही है, इसलिए मेरे साथ चलें। पहला चरण, वह मुँह के बल गिरता है। दूसरा चरण, सिर काट दिया गया।

अब, मैं चाहता हूँ कि आप 1 शमूएल 17 को थामे रहें और जल्दी से मेरे साथ 1 शमूएल 5 पर चलें। मैं आपको उस बात की याद दिलाना चाहता हूँ जो इससे पहले पलिश्तियों के बीच हुई। देखें क्या हुआ था, आप 1 शमूएल 5 को देखें, पलिश्तियों ने वाचा के सन्दूक को पकड़ लिया था। अपने लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति और उसकी महिमा की तस्वीर और आप इसे छू नहीं सकते। आप इसे उठाकर चलते हैं। वापस लाते समय, इसे छूने के कारण एक व्यक्ति की मौत हो जाती है। यह परमेश्वर की पवित्रता की तस्वीर थी, और पलिश्ती इसे अपने साथ ले जाते हैं। इसे ले जाकर, वे इसे अपने देवता दागोन के मन्दिर में रखने का निर्णय लेते हैं।

इस झूठे देवता की मूरत उस घर में है – इस कहानी को सुनें, अध्याय 5, पद 1. "और पलिश्तियों ने परमेश्वर का सन्दूक एबनेजेर से उठाकर अशदोद में पहुँचा दिया; फिर पलिश्तियों ने परमेश्वर के सन्दूक को उठाकर दागोन के मन्दिर में पहुँचाकर दागोन के पास धर दिया।" उन्होंने उन को एक–दूसरे के साथ रखा, और इसे सुनें। "बिहान को अशदोदियों ने तड़के उठकर क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुँह भूमि पर गिरा पड़ा है।" पहला चरण, सच्चे परमेश्वर के सामने मुँह के बल गिर पड़ना।

सुनें आगे क्या होता है। और वे दागोन को उठाकर पुनः उसके स्थान पर रख देते हैं, बेचारा दागोन। पद 4, "फिर बिहान को जब वे तड़के उठे, तब क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुँह भूमि पर गिरा पड़ा है; और दागोन का सिर और दोनों हथेलियाँ डेवढ़ी पर कटी हुई पड़ी हैं।" दूसरा चरण, सिर काटना। और तस्वीर यह है कि सच्चे परमेश्वर की सर्वोच्चता के सामने झूठा ईश्वर गिर पड़ा। 1 शमूएल 17, इनके प्रतिनिधि, परमेश्वर के दास के सम्मुख गोलियत गिर जाता है और उसका सिर काट दिया जाता है। संग्राम मुख्यतः दाऊद का नहीं है। यह युद्ध यहोवा का है।

और स्वाभाविक रूप से पलिश्तियों ने वहाँ न रहने का निर्णय लिया। पद 51 का अन्त, "यह देखकर कि हमारा वीर मर गया पलिश्ती भाग गए। इस पर इस्राएली और यहूदी पुरूष ललकार उठे, और गत और एक्रोन से फाटकों तक पलिश्तियों का पीछा करते गए, और घायल पलिश्ती शारैम के मार्ग में और गत और एक्रोन तक गिरते गए। तब इस्राएली पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट आए, और उनके डेरों को लूट लिया। और दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम में ले गया; और उसके हथियार अपने डेरे में धर लिए।

इस कहानी के तीन आयाम। अजेय चरित्र, असंभव चुनौती, और तीसरा, असंभाव्य विजेता। किसने सोचा होगा कि विजेता 9 फुट 9 इन्च का दैत्य नहीं, बल्कि 20 वर्षीय चरवाहा बालक होगा। वह विजेता क्यों था? अपनी ताकत या दक्षता के कारण नहीं। मुख्यतः दो अवयवों के कारण। पहला, वह परमेश्वर की महिमा के प्रति जोशीला था। दाऊद–इससे न चूकें। दाऊद ने गोलियत में कभी दैत्य को नहीं देखा था। पूरे समय वह जानता था कि विशालकाय यहोवा है।

और जब वह इस दृश्य में आया और उसने परमेश्वर के नाम की निन्दा और अपमान होते देखा, तो वह चुप नहीं रह सका। और उसने ऐसा खतरा उठाया, जिसे करने के बारे में दूसरे हजारों प्रशिक्षित सैनिक सोच भी नहीं सकते थे। परमेश्वर की सर्वोच्चता को दर्शाने के लिए वह कदम बढ़ाता है, परमेश्वर की महिमा के बारे में जोशीला, और दूसरा, परमेश्वर की सामर्थ में भरोसा। वह जानता था कि यहोवा जिसने उसे सिंह और भालू से बचाया वह उसे इस पलिश्ती से भी बचाएगा। "संग्राम यहोवा का है," उसने कहा। "वह गोलियत को मेरे हाथ में कर देगा।" और यही दाऊद और गोलियत की कहानी है।

अब, हम देख रहे हैं कि यह एक चरवाहे बालक की कहानी से कहीं अधिक है। यहाँ कुछ अत्यधिक गहरा, बहुत गहरा हो रहा है, और यह मेरे या आपके यह कहने से गहरा है, "इस जीवन में हम दैत्यों के सामने कैसे बहादुर हो सकते हैं?" मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ तीन विभिन्न स्तरों पर इस कहानी के बारे में सोचें। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ व्यक्तिगत इतिहास, राष्ट्रीय इतिहास और छुटकारे के इतिहास के स्तर के बारे में सोचें।

मेरा मतलब यह है। कुछ कहानियों के बारे में सोचें जिन्हें हम इस वर्ष देख चुके हैं। अब्राहम द्वारा इसहाक को वेदी पर बलिदान करने के बारे में सोचें। यह कहानी वास्तव में तीन विभिन्न स्तरों के बारे में है। एक व्यक्तिगत इतिहास है, एक पिता और एक पुत्र है, और पिता अपने पुत्र की बलि चढ़ाने वाला है। परन्तु एक और कदम बढ़ाएँ और आपके पास राष्ट्रीय इतिहास है। इसकी बहुत सी शाखाएँ हैं, न केवल अब्राहम और इसहाक के लिए, बल्कि पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के लिए भी। यह प्रतिज्ञा किया गया वारिस है, जो इस्राएल के लोगों में वंशजों को लाएगा, और उसकी बलि चढ़ने पर है, और परमेश्वर अपने लोगों, इस्राएल के लोगों को बनाए रखने के लिए एक मेमना उपलब्ध कराता है। यह राष्ट्रीय इतिहास है।

अब इसे थोड़ा और आगे बढ़ाएँ, छुटकारे का इतिहास, और यह पुराने नियम में केवल इस्राएल से बड़ा है। यह परमेश्वर की कहानी है जो अपने लोगों को सुरक्षित रखने के लिए बलि के मेमने को लेता है और उसे

उपलब्ध कराता है। यह एक तस्वीर है, मसीह की महिमामय तस्वीर। हमने फसह को देखा। हाँ, यह उस की कहानी है जो उस विशेष रात में हुआ, जब इस्राएली मिस्र से निकल और उस स्तर पर जो रहा था। परन्तु एक गहरी रीति में, परमेश्वर अपने लोगों को दासत्व से स्वतन्त्र कर रहा था, कि उन्हें नई वाचा, मूसा की वाचा, और प्रतिज्ञा के देश में लाए। यह विशाल था, और उसने इसे मेमने के लहू के द्वारा किया। इसे पूर्णतः दूसरे स्तर पर ले जाता है, जहाँ हम देखते हैं कि परमेश्वर ने हमें पाप की गुलामी से छुटकारा दिया है, पाप से स्वतन्त्र किया है, और उसने इसे मेमने के लहू के द्वारा किया है। व्यक्तिगत इतिहास, राष्ट्रीय इतिहास, छुटकारे का इतिहास।

यह गूगल अर्थ के समान है, जहाँ आप किसी वस्तु को निकटता से देखते हैं, और आप पूरी तस्वीर को देखने के लिए उसे विस्तृत करते हैं। इसलिए आप मेरे साथ इसके बारे में सोचें, व्यक्तिगत इतिहास। सबसे छोटा मूल स्तर, सबसे निचला स्तर, जिसे हमने अभी पढ़ा है। बहुत आसान। चरित्र, अजेय चरित्र गोलियत है। यह आसान है। और चुनौती, दैत्य को हराना असंभव चुनौती थी। एक पात्र है गोलियत, जो समस्या उत्पन्न कर रहा है। चुनौती, आपको उस दैत्य को हराना है। इसे कौन करेगा? एक के बाद एक दिन, इस्राएलियों का उत्तर है कि कोई नहीं। राजा भी इसे नहीं कर सकता। और वहाँ पर हम देखते हैं कि परमेश्वर एक दूसरे राजा को खड़ा करता है, जो असंभाव्य विजेता की ओर ले जाता है जिसके बारे में हमने अभी बात की, दाऊद, जो जल्द ही राजा बनने वाला है।

यह संयोग नहीं है कि 1 शमूएल 17 से ठीक पहले, 1 शमूएल 16 के अन्त में, हम देखते हैं कि इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया जाता है। यह कोई संयोग नहीं है। इस तस्वीर का आधार तैयार करना, व्यक्तिगत इतिहास।

अब आइए इसे थोड़ा और आगे ले चलते हैं, राष्ट्रीय इतिहास। हम जानते हैं कि इस तराई में खड़े दाऊद और गोलियत अपने आप से कहीं बढ़कर प्रतिनिधित्व करते हैं। यह दो व्यक्तियों के बीच की लड़ाई के बारे में नहीं है। यह दो राष्ट्रों के बीच की लड़ाई के बारे में है। अब हमारे पास पात्र हैं, पड़ोसी राज्य हैं। पलिश्ती हैं। एक इतिहासकार ने कहा, "पलिश्ती केन्द्रीय पहाड़ों में रहने वाले इस्राएलियों के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा का मुख्य मुद्दा थे।" न्यायियों की पुस्तक में वे इस देश में बस गए थे और सब कुछ ठीक नहीं हो रहा था, और ये अन्यजाति राष्ट्र उठ रहे थे।

और चुनौती है परमेश्वर के लोगों का छुटकारा। कौन परमेश्वर के लोगों को इन राष्ट्रों से और उनकी मूर्तिपूजा से और उनकी अनैतिकता से और खतरों से बचाएगा जिसे वे इस्राएल पर डाल रहे हैं। इसे कौन करेगा? इस्राएल पहले से ही पलिश्तियों के सामने हार रहा है जो कभी वाचा के सन्दूक को ले जाते हैं तो कभी कुछ और। उन्हें कौन छुटकारा देगा? क्या शाऊल अपने लोगों, परमेश्वर के लोगों को छुटकारा देगा? शाऊल चुपचाप बैठा है कुछ नहीं कर रहा है।

और यहीं पर हम देखते हैं कि परमेश्वर निर्णायक रीति से असंभाव्य विजेता, दाऊद को खड़ा करता है। न केवल जल्दी ही राजा बनने वाला, बल्कि चरवाहा राजा। वह राजा बनता है, और यह तस्वीर है। हमने शेष शमूएल को नहीं पढ़ा – 1 शमूएल 17 और फिर अध्याय 18 में, परन्तु हम देखते हैं कि दाऊद की शाऊल से भी अधिक प्रशंसा और बड़ाई होने लगती है। परमेश्वर दाऊद को ऊँचा उठा रहा है, चरवाहा राजा, जो दिखाएगा कि एक परमेश्वर है जो उन सबके ऊपर राज्य करता है जो उसके लोगों के लिए लड़ते हैं, और यह राजा दिखाएगा कि परमेश्वर आराधना के योग्य है। अतः राष्ट्रीय इतिहास के इस स्तर पर यही हो रहा है।

परन्तु यह केवल एक कहानी नहीं है जो कुछ हजार वर्षों पूर्व एक तराई में घटी। यह एक तस्वीर है कि परमेश्वर कुछ महान, कुछ अद्भुत चित्र बना रहा है। कहानी इस प्रकार है। गोलियत और उसकी सारी मूर्तिपूजा और परमेश्वर की निन्दा और अनैतिकता किसी महान बात की तस्वीर है। वह शैतान की तस्वीर है जिसने पलिश्तियों को पराए देवताओं के पीछे लगा दिया था, जिसने आस–पास के राष्ट्रों को पराए देवताओं के पीछे लगा दिया था। शैतान जिसने इस्राएलियों को भी मूर्तिपूजा और अनैतिकता में गिरा दिया था, और वह शैतान जो हम में से प्रत्येक को उकसाता है। हमें सच्चे परमेश्वर से पराए देवताओं, अपने आप, हमारे धन या हमारी अभिलाषाओं की ओर मोड़ देता है। शैतान जिसने हम में से प्रत्येक को बहका दिया है जिसे 2 तिमुथियुस 2:26 जाल कहता है, शैतान का जाल।

अजेय पात्र, दुष्ट, शैतान। असंभव चुनौती, पाप का नाश। शैतान लोगों के मनों पर कब्जा किए हुए है। कौन उसका सामना करेगा? इस संसार के राजकुमार से कौन लड़ेगा? उस दुष्ट से कौन लड़ेगा जो परमेश्वर के लोगों को नाश कर रहा है और परमेश्वर के नाम का अपमान कर रहा है? क्या आप?

और आधार तैयार है, बेतलेहम की छाया में से, जहाँ का दाऊद था, बेतलेहम की छाया में से एक असंभाव्य विजेता कदम बढ़ाता है, एक गरीब परिवार में निर्धन अवस्था में जन्मा हुआ। जो इस संसार के हथियारों

और इसके वस्त्रों और आभूषणों के साथ नहीं जीता है, लोगों के बीच में चलता है, प्रेम करता है और संभाल करता है और एक मुठभेड़ की ओर बढ़ रहा है जहाँ उसका सामना पाप से और शैतान से और क्रूस पर मृत्यु से होगा, सब कुछ अपने पिता की महिमा के लिए। यूहन्ना 12, "अब मैं क्या कहूँ? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर। अपनी महिमा दिखा।"

और वह परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा क्रूस पर पाप और शैतान और मृत्यु का सामना करता है, वह जी उठता है और हम इस असंभाव्य विजेता, यीशु, हमारे उद्धारकर्ता, राजा को देखते हैं। उसने दैत्य को मार दिया है। उसने शैतान को नष्ट कर दिया है।

अब हम यह समझने के लिए तैयार हैं कि इस कहानी का हमारे जीवनों के लिए क्या अर्थ है। यह नहीं कि इस सप्ताह जब तुम बाहर जाकर अपने जीवन में दैत्यों का सामना करो तो बहादुर बनो। नहीं, यह इससे कहीं गहरा है। इसके बारे में सोचें। मैं ने कहानी से तीन प्रार्थनाओं को रखा है जिन्हें मैं चाहता हूँ कि हम करें, आप वह प्रार्थना करें। एकमात्र परमेश्वर हमारी सहायता कर। आपकी महिमा के लिए जोश के साथ जीने में हमारी सहायता कर। हमारी सहायता कर कि हम किसी भी दैत्य से बढ़कर आपकी महानता को देखें और किसी भी बात से अधिक आपकी महिमा की लालसा करें।

कहानी का बिन्दू दैत्यों के सामने बहादुर होना नहीं है। बिन्दू है परमेश्वर की महिमा के प्रति जोश रखना। हम अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों और चुनौतिपूर्ण अवरोधों का सामना करते हैं, और मेरा अनुमान है कि आप भी ऐसे बहुत से अवरोधों का सामना कर रहे हैं। और यथार्थ है कि जब आप उन अवरोधों और चुनौतियों का सामना करें, तो लक्ष्य यह नहीं है कि इस दैत्य या उस का सामना कैसे किया जाए। लक्ष्य यह कहना है, "हे परमेश्वर, मैं चाहता हूँ कि इस परिस्थिति में, इस अवरोध में, आपके नाम की महिमा हो, और यदि इसका अर्थ उस अवरोध को वहीं रखना है जैसा आपने 2 कुरिन्थियों 12:7 में पौलुस के जीवन में किया, और उसने तीन बार पूछा, "मेरे शरीर से यह कांटा निकाल दे।" और परमेश्वर कहता है, "नहीं, मैं इसे यहीं रखूँगा, और मेरा अनुग्रह तेरे लिए काफी है और इस परिस्थिति में मेरी महिमा होगी।" तो ऐसा ही हो, क्योंकि इन कठिन परिस्थितियों से छुटकारा पाने से बढ़कर, मैं आपकी महिमा चाहता हूँ और मैं चाहता हूँ कि आपका नाम ऊँचा हो।

हमारी समस्या के सामने परमेश्वर की महिमा का जोश, कि हमारा जोश हमारी सुरक्षा या हमारे बचाव या हमारे आराम या हमारी योजनाओं के हमारी इच्छानुसार पूरा होने के बारे में न हो। हमारा जोश परमेश्वर हो, उसके नाम की महिमा करना हो। यही सफलता है। अपने नाम की महिमा कर, उस प्रत्येक समस्या में आपका नाम ऊँचा हो जिसका हम सामना करते हैं और फिर उस प्रत्येक स्थान में जहाँ हम जाते हैं। ओह, यह तस्वीर, यह मुझे चुनौती देती है। दाऊद को पहली बार युद्ध के क्षेत्र में आते देखना, उसका परमेश्वर की निन्दा को सुनना और उठकर कहना, "मैं तुम सब लोगों के साथ खाली नहीं बैठ सकता। कुछ करना ही होगा।"

परमेश्वर लोगों को खड़ा करे कि वे अपने घरों में, अपने नगरों में, अपने पड़ोस में, अपने कार्यस्थलों में परमेश्वर की महिमा के लिए जीएँ। और इसका यह मतलब नहीं है कि हम बाहर जाकर पत्थर फेंकना और लोगों को सिरों को काटना शुरू कर दें। हम यह करते हैं कि जब हम किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बैठते हैं जो परमेश्वर की महिमा को नहीं जानता और उसकी आराधना नहीं करता और उससे आनन्दित नहीं होता है, तो हम चुप नहीं बैठते हैं। हम उन्हें परमेश्वर की अच्छाई और उसकी महिमा और उसके अनुग्रह के बारे में बताते हैं। वे उसे जानकर उसकी आराधना कर सकते हैं क्योंकि वह हर व्यक्ति से महिमा पाने के योग्य है, और हम चाहते हैं कि वे उसकी महिमा को जानें। हम चाहते हैं कि इस स्थान में उसका नाम ऊँचा हो। हम में यह जोश उत्पन्न हो कि हम परमेश्वर की महिमा को हर स्थान में फैला दें।

और स्पष्टतः यहीं रूकना नहीं है। इसी कारण हम भारत में यह सब कर रहे हैं। इसलिए नहीं कि हम परोपकारी हैं, कुछ अच्छा करना चाहते हैं। नहीं। भारत में करोड़ों देवताओं की पूजा की जा रही है, और यहोवा परमेश्वर की महिमा नहीं होती है, और इसलिए हम चुपचाप नहीं बैठेंगे। इसके बारे में हम कुछ करेंगे और हम अपने संसाधनों को देंगे ताकि भारत में परमेश्वर की आराधना हो। यही हमें हर समस्या में चलाता है और हर स्थान पर ले जाता है।

दूसरा, हे परमेश्वर आपकी सामर्थ में भरोसे के साथ जीने में हमारी सहायता करें। यहीं खूबसूरती है। परमेश्वर चाहता है उसकी महिमा हो, और वह हमें अपनी महिमा को फैलाने की सामर्थ देता है। यही इस सारी घटना का मुख्य बिन्दु है। युद्ध यहोवा का है। जब हम परमेश्वर की महिमा के लिए जी रहे हैं, तो यह हमारी ताकत या हमारी दक्षता नहीं है। वह हमें अपनी महिमा को फैलाने के लिए स्वर्ग के दिव्य संसाधन देता है। युद्ध उसका है।

इसलिए अब इसके बारे में सोचें। इस तथ्य के प्रकाश में कि मसीह हमारा उद्धारकर्ता राजा है, असंभाव्य विजेता, जिसने पाप और शैतान और स्वयं मृत्यु का सामना किया, और वह जीत गया है। क्या आपको इसके अर्थ का अहसास है? जब हम इस कहानी को पढ़ते हैं तो हम अपने आपको स्वतः ही दाऊद के स्थान पर पाते हैं। ठीक है, दाऊद के समान हमें क्या करना चाहिए? परन्तु वास्तविकता यह है यदि यह कहानी हमारी ओर संकेत करती है, इस तथ्य का कि मसीह हमारे लिए जीत गया है, तो हम इस बिन्दु पर वास्तव में इस्राएलियों से बढ़कर हैं क्योंकि दैत्य को मार दिया गया है। शैतान को नष्ट कर दिया गया है।

युद्ध समाप्त हो चुका है। मसीह ने पाप को जीत लिया है और आप और मैं दौड़ने और उस आजादी को अनुभव करने के लिए मुक्त हैं। आपको इसके अर्थ का पता है। इसका अर्थ है कि हम जीत के लिए नहीं लड़ते हैं। विजय तो पहले ही मिल चुकी है। मसीह ने पाप को जीत लिया है। हम विजय के लिए नहीं लड़ते हैं, हम जय के साथ लड़ते हैं, और इनमें बड़ा अन्तर है। क्योंकि इस सप्ताह पाप और परीक्षाओं के साथ आपके युद्धों में, यदि मसीह आपके अन्दर है, परमेश्वर की सन्तान, यदि मसीह आपके अन्दर है, तो आप उस युद्ध में कमजोर नहीं हैं। आप मजबूत हैं। आपके पास पाप के ऊपर सामर्थ है।

परन्तु शत्रु आपको इसकी विपरीत बात का विश्वास न दिलाने पाए। वह हार गया है। आपके अन्दर मसीह पर उसकी कोई ताकत नहीं है। वह हारा हुआ है, और अब आप उस विजय को जी रहे हैं जिसे मसीह ने आपकी खातिर खरीदा है।

इसलिए जब आप उस परीक्षा का सामना करते हैं जो बार–बार वापस आती रहती है, इसे जानें। उसकी आपके ऊपर कोई ताकत नहीं है। मसीह की आपके ऊपर सामर्थ है। वह जीवित है, वह आप में रहता है और आपको वह सब देता है जो उस पर जय पाने के लिए आपको चाहिए। इसमें विश्वास रखें। यह आप में उतरने पाए, यह आप दिल और दिमाग में बैठने पाए, कि हम जीतने के लिए नहीं लड़ रहे हैं। हम विजय के स्थान से लड़ रहे हैं।

और यह सब हमें इस अन्तिम प्रार्थना की ओर लाता है। हे परमेश्वर, हमारी सहायता करें कि हम अपने विजेता के रूप में यीशु की ओर देखें। वह उस प्रत्येक परीक्षा और पाप में हमारा विजेता है जिसका हम सामना करते हैं। मसीह हमारा विजेता है, और हमारी आँखें उस पर लगी हैं। उसकी सामर्थ में, उसकी महिमा के लिए, हर परीक्षा और पाप जिसका हम सामना करते हैं और हर परख और संघर्ष जिसका हम अनुभव करते हैं। मैं आपके संघर्षों और परीक्षाओं और कठिनाईयों और कठिन परिस्थितियों की बहुलता के

बारे में नहीं जानता हूँ, परन्तु मैं यह जानता हूँ। मसीह ने पाप और कष्ट, शैतान और मृत्यु को जीत लिया है, इसलिए, आपको बिल्कुल भी डरने की आवश्यकता नहीं है। आपको बिल्कुल भी डरने की आवश्यकता नहीं है। अपनी आँखें मसीह पर लगाएँ, अपने विजेता पर लगाएँ। और जब आप अपनी आँखें उस पर लगाते हैं, तो परमेश्वर की महिमा के लिए जोशीले रहे और परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसा रखें। यही मसीही मार्ग है।